International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 103-106

किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1] विवेक कुमार सिंह, [2] डॉ० जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। किशोरावस्था एक जटिल अवस्था है उसी प्रकार किशोरो की शिक्षा भी एक जटिल समस्या है किशोर को दिशाबोध देना राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है। इस शोध पत्र के माध्यम से किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उनमे आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है और छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द : सतना जिला, विद्यार्थी, अभिभावक अभिप्रेरणा एवं प्रभाव।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव के विकास की आवश्यकता है, जिसके अभाव में व्यक्ति का जीवन देश और समाज को गतिविधियों से अधूरा रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह व्यक्तिगत उन्नति के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में अपनी सक्रियता खोकर पिछड़ेपन का शिकार हो जाता है। अतः षिक्षा ही वह सषक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन की प्रगति करते हुए सामाजिक व आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जब हम शिक्षा का संकुचित अर्थ लेते हैं तो हमारा स्वभावतः इस बात पर चला जाता है कि शिक्षा विज्ञान है अथवा कला कलाएँ प्रायः जन्मजात हुआ करती हैं। काव्य कला आदि के विषय में यही प्रख्यात है। व्यक्ति की रुचि कला में प्रकृया होती है। वह अभ्यास करता है और स्वतः उसे उस कला में दक्षता प्राप्त हो जाती है। पहले शिक्षा के विषय में भी यही धारणा थी। लोग यह समझते थे कि किसी व्यक्ति को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान है और उसमें पढ़ाने की रुचि है तो वह पढ़ाते–लिखाते अपने आप एक कुशल शिक्षक बन जाता है। कुछ सीमा तक यह बात सत्य भी है। कहा जाता है कि शिक्षक पैदा होते हैं, बनाये नहीं जाते। किन्तु 'नीम–हकीम खतरे जान' वाली कहावत से भी हम परिचित हैं। यही हाल शिक्षा का भी है। अपने विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किए हुए भी कभी–कभी कुछ व्यक्ति बड़े अयोग्य शिक्षक सिद्ध होते हैं। शिक्षा निस्संदेह कला है किन्तु यह विज्ञान भी है। शिक्षा का अपना पृथक् शास्त्र है। उसके अपने पृथक् सिद्धांत हैं। बालक की रुचि एवं योग्यता का शिक्षा में दिग्दर्शन होता है। किसी विषय को किस प्रकार पढ़ाया जाय, इसकी जानकारी मिलती है। शिक्षा–सिद्धांत, शिक्षा–मनोविज्ञान, शिक्षण–विधियों आदि पर शिक्षाशास्त्र विचार करता है। शिक्षा का अपना अलग इतिहास है। इस दृष्टि से शिक्षा स्वयं में एक विज्ञान है, एक शास्त्र है, एक विवेचन है और ज्ञान की अन्य शाखाओं के अन्तर्गत उसने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना लिया है। अब वह दर्शन या धर्म का भाग न होकर एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकृत है। किन्तु जहाँ पर हम यह कह रहे हैं कि शिक्षा एक विज्ञान है वहाँ पर हम यह नहीं भूल रहे हैं कि शिक्षा एक कला भी है। शिक्षा–विज्ञान की जानकारी प्राप्त करके भी हम जब तक उसे व्यवहार में नहीं उतारेंगे तब तक हम शिक्षक नहीं बन सकते। अतः शिक्षा का प्रायोगिक रूप भी महत्वपूर्ण है। सिद्धांतों को व्यवहृत बनाना है। यह दक्षता अभ्यास से आती है। यह अभ्यास शिक्षा का कलात्मक पक्ष है। इस दृष्टि से शिक्षा कला और विज्ञान दोनों है।

समाज अपनी आवश्यकतानुसार शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन करता आया है, फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र भी परिवर्तित हुए है। प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' था। क्रमशः आवश्यकताओं के असीमित होने से इसके उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुआ है।

शिक्षण एक स्वयं में अति विस्तृत क्षेत्र है तथा अनुसन्धान किसी समस्या के समाधान के लिए चरणबद्ध पद्धति से किया जाने वाला प्रयास है। वहीं शैक्षिक अनुसन्धान से मूल प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप नवीन ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। निश्चय ही शैक्षिक अनुसन्धान अन्य सामाजिक तथ्यों से पृथक है क्योंकि अन्य सामाजिक विशयों के अनुसन्धान में नवीन ज्ञान की वृद्धि को ही महत्व दिया जाता है जबकि शैक्षिक अनुसन्धान में वृद्धि के साथ–साथ उसकी उपयोगिता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार शैक्षिक अनुसन्धान के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विशयों अथवा तथ्यों की खोज नवीन सिद्धांतों तथा सत्यों का क्रियान्वयन किया जाता है।

बालक राष्ट्र की धरोहर होते हैं। सुविख्यात अंग्रेजी कवि मिल्टन का कथन है कि – "यथा सूर्योदय होने पर ही दिवस होता है।" वैसे ही मानव का उद्भव बालक से होता है। अतः प्रत्येक राष्ट्र का यह परम पुनीत कर्तव्य है कि वह अपने अमूल बाल धन की सर्वाधिक सुरक्षा करे। परिवर्तन एक शाश्वत नियम है परिवर्तन के इस चक्र से हर समाज एवं व्यवस्था को गुजरना होता है। आज भारतीय संस्कृति में त्याग, तपस्या, श्रम, साधना, प्रेम, दया–भाव, बड़ों के प्रति आदर भाव, सदाचार, शालीनता आदि मूल्यों के आधार पर स्वार्थ, द्वेशभाव, हिंसा, संवेदनशीलता, असत्य, छल–कपट जैसे मूल्यों का विकास होता है। इन सब का सर्वाधिक प्रभाव आज के किशोर बालक–बालिकाओं में ज्यादा देखने को मिलता है। आधुनिक युग में किशोरों की विशेषताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। वहीं शिक्षा किशोरों के लिए लाभप्रद होगी क्योंकि किशोरों के सम्पूर्ण विकास में शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण सामाजिक क्रिया है जिसका आयोजन छात्रों

के संरक्षकों, अध्यापकों, विद्यालय समितियों और समाज के सदस्यों द्वारा किया जाता है। इसका मानव जाति के बौद्धिक, सावेंगिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन से निकट का सम्बन्ध है। यह व्यक्ति को प्रकृति प्रदत शक्तियों का ज्ञान कराती है और इस प्रकार बालकों में सुखी एवं उत्तरदायी व्यक्ति बनने की योग्यता लाती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

किशोरावस्था एक जटिल अवस्था है उसी प्रकार किशोरो की शिक्षा भी एक जटिल समस्या है किशोर को दिशाबोध देना राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है। किशोर बालक–बालिकाएँ अनेक समस्याओं से अपने आप को घिरा हुआ पाते है यदि इन समस्याओं का समाधान नही होता तो उनमें मानसिक द्वंद तथा तनाव बढ़ जाता है। पूर्ण रूप से समायोजित किशोर राष्ट्र के लिए वरदान है। किशोरावस्था बेचैनी, तनाव एवं संघर्ष की अवस्था है इसी अवस्था में छात्रों के उद्देश्य निर्धारित होते है, जो एक राष्ट्र की आवश्यकता के अनुरूप होता है। अध्ययन क्षेत्र में किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी तथा इन्हें सशक्त बनाने के लिए अपने शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है।
2. शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- किशोरावस्था में विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा के प्रभाव को ज्ञात करना।
- किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा के प्रभाव को ज्ञात करना।
- शैक्षिक उपलब्धि में आने वाली समस्याएँ व अवरोधों का पता लगाना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र सतना जिला है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), मझगवाँ, रामपुर बघेलान, नागौद, उचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर किशोरावस्था में विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।
- **प्रष्नावली निर्माण :** प्रश्नावली का सामाजिक अनुसंधान में विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र में फैले हुए सूचनादाताओं से आंकड़े संकलन करने में महत्वपूर्ण स्थान है। यह आंकड़े संकलन करने की एक ऐसी प्रविधि है, जिसमें कम समय में अनेक सूचनादाताओं जो कि विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए होते हैं, से सूचना एकत्रित की जा सकती है। प्रश्नावली प्रश्नों की सूची होती है जिनका उत्तर स्वयं सूचनादाता भरता है। अतः इसका प्रयोग उन्हीं परिस्थितियों में किया जा सकता है जिसमें सूचनादाता शिक्षित हो।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव तथा शैक्षिक तनाव के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से आर्येन्दु, आहुजा (2001)[1], अग्रवाल, रीना (2007)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], झा, शीतला एवं दुबे शैलजा (2016)[4], सिंह, शिव प्रकाश (2007)[5] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6], पाठक, पी. डी. (2007)[7] ने शोध विधि एवं विज्ञान विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

समष्टि व प्रतिदर्श

किशोरावस्था में विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव, शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 80 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2–2 अभिभावक कुल 80 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

9. सतना जिले का सामान्य परिचय

सतना जिला भारत के मानचित्र में 23.58º-25.12º उत्तरी अक्षांश तथा 80.12º-81.23º पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1. 78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के

अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमशः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

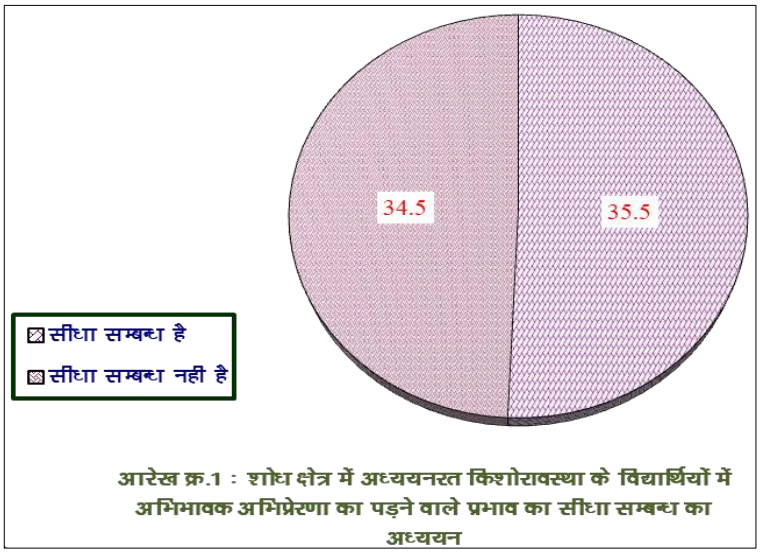

आरेख क्र.1 : शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध का अध्ययन

परिकल्पना 1: शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है।

सारणी 1: शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध का अध्ययन.

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का			
			सीधा सम्बन्ध है		सीधा सम्बन्ध नही है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	40	29	72.50	11	27.50
2.	शिक्षक	80	54	67.50	26	32.50
4.	अभिभावक	80	48	60.00	32	40.00
योग		200	131	65.50	69	34.50

विश्लेषण एवं व्याख्या

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 72.50 प्रतिशत प्राचार्य, 67.50 प्रतिशत शिक्षक व 60.00 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है और शोध क्षेत्र के 40.00 प्रतिशत अभिभावक, 32.50 प्रतिशत शिक्षक व 27.50 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध नही है।

व्याख्या

शोध क्षेत्र के 65.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : "शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन.

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन			
		छात्र		छात्राओं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 40 अंक से कम (अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं)	102	25.50	92	23.00
2.	40 अंक से अधिक किन्तु 60 अंक से कम (न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति)	196	49.00	200	50.00
3.	60 अंक से अधिक किन्तु 80 अंक से कम (दक्षता की ओर अग्रसर)	76	19.00	84	21.00
4.	80 अंक से अधिक किन्तु 100 अंक से कम (दक्षता की प्राप्ति)	26	6.50	24	6.00

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 में न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 400 छात्र और 400 छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 2 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित छात्र/छात्राओं में से 102 छात्र एवं 92 छात्राएं न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं कर पाएँ तथा 196 छात्र एवं 200 छात्राओं ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की। इसी प्रकार से 76 छात्र तथा 84 छात्राएँ दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 26 छात्र एवं 24 छात्राओं ने दक्षता को प्राप्त कर लिया है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र 25.50 प्रतिशत एवं 23.00 प्रतिशत छात्राएँ न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त नहीं कर सके तथा 49.00 प्रतिशत छात्र, 50.00 प्रतिशत छात्राओं ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की है, इसी प्रकार 19.00 प्रतिशत छात्र एवं 21.00 प्रतिशत छात्राएँ दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 6.50 प्रतिशत छात्र एवं 6.00 प्रतिशत छात्राओं ने दक्षता की प्राप्ति कर ली है।

सारणी 3: सर्थकता हेतु सारणी

समूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	400	51.65	17.21	**-0.30**
छात्राएँ	400	52.15	16.26	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (200-1) + (200-1)$
$= 199 + 199$
$= 398$

11. विश्लेषण

उपरोक्त सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के (शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव पर) अधिगम स्तर का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के छात्रों में अधिगम स्तर सम्बन्धी औसत उपलब्धि 51.65 तथा मानक विचलन 17.21 है। छात्राओं में अधिगम स्तर औसत उपलब्धि 52.15 तथा मानक विचलन 16.26 है।

शोध क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान –0.30 है।

12. व्याख्या

3.98 df. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –0.30 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है।

सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

13. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है और छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

14. सन्दर्भ ग्रंथ

1. आहुजा, राम – सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001.
2. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2003.
4. झा, शीतला एवं दुबे शैलजा – मध्याह्न भोजन कार्यक्रम व स्व सहायता समूह के कार्य निष्पादन पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, Research Expo International Multidisciplinary Research Journal, 2016; Vol. VI, Issue – I, pp.59-64.
5. सिंह, शिव प्रकाश – भारत में 'सभी के लिये शिक्षा' अभियानः मिथक या वास्तविकता, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, 2007; आगरा, पृ0 1878–1879।
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.